अध्याय
8

काठमांडू दर्शन

-डॉ. नगेन्द्र

दिल्ली से नेपाल की यात्रा मुश्किल से तीन घंटे की है और वह भी फॅाकर फ्रेंडशिप विमान से फिर भी विदेश तो विदेश ही है अत: मेरे परिवार और अन्तरंग वृत्त में थोड़ी सी हलचल पैदा हो गई और हल्की-सी उत्तेजना मेरे मन में भी थी। कलकत्ता, मुम्बई, मद्रास, मैसूर, त्रिवेन्द्रम, कश्मीर आदि की यात्रा मेरे लिए एक सामान्य घटना बन चुकी है। हवाई-यात्रा का भी कोई आकर्षण नहीं रह गया, क्योंकि अधिक व्यस्तता के कारण अब मैं प्राय: विमान से ही यात्रा करता हूँ। पर नेपाल के साथ विदेश की धारणा संलग्न होने के कारण यह थोड़ी सी उत्तेजना अस्वाभाविक नहीं थी। मेरे परिजन नेपाल में अतिशय शीत की कल्पना कर, गर्म कपड़ो की विशेष व्यवस्था करने लगे।और कपड़े तो ठीक ही थे, पर मेरे ओवरकोटके विरुद्ध सभी ने एकमत होकर यह फैसला दिया कि यह विदेश में ले जाने लायक नहीं है।कोट पुराना जरूर था और मैं उसे बदलने का विचार भी कर रहा था, पर इतनी जल्दी दूसरे कोट के लिए भाग-दौड़ करने के लिए मैं तैयार नहीं था। तब यह निश्चय किया गया कि मेरा पुराना कोट ले जाकर उसी के नाप का दूसरा कोट खरीद लिया जाए। मैंने इस प्रस्ताव का प्रतिवाद करते हुए कहा कि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ के लिए मेरा यह कोट बहुत बुरा नहीं रहेगा और अपने देश में तो अब सर्दी बीत ही चुकी है, इसलिए अगले वर्ष सुविधा से अच्छा-सा ओवर कोट बनवा लिया जाएगा। यद्पि बहुमत अब भी इसके लिए तैयार नहीं था,परन्तु समय के अभाव के कारण नया ओवरकोट नहीं आ सका। नेपाल यात्रा के लिए पासपोर्ट आदि का बंधन नहीं है और न स्वास्थ्य-संबंधी प्रमाण-पत्र ही आवश्यक होता है। विदेश मंत्रालय के किसी उच्च अधिकारी के परिचय-पत्र से काम चल जाता है। भारत नेपाल के नैकट्य और पारस्परिक सद्भाव-सहयोग के कारण इस प्रकार की सुविधाएँ दोनों देश के नागरिकों को प्राप्त हैं। लेकिन सीमा शुल्क (कस्टम्स) विभाग उतना ही सतर्क है; उसकी ओर से बाकायदा तलाशी ली जाती है और इसके बाद फिर यात्री को बाहर आने जाने की अनुमति नहीं मिलती। विमान के चलने में कुछ विलम्ब होने के कारण इसमें मेरे लिए कठिनाई हो सकती थी, पर पुलिस के एक अधिकारी के सौजन्य से, जो मेरे पूर्व-छात्र थे, यह बाधा दूर हो गई और बच्चों को मेरे पास आने-जाने की सुविधा मिल गई।

अपराह्न में कोई 11.30 बजे के आसपास फॉकर की उड़ान शुरू हुई और घंटे-डेढ़ घंटे में हम लोग गोरखपुर की सीमा पारकर हिमालय की तराई में पहुँच गए। जहाँ से परिदृश्य बदलने लगा। नीचे सघन वृक्ष-राजि से मंडित विस्तीर्ण कान्तार था, लगता था जैसे श्यामल हरीतिमा का समुद्र हिलोरें ले रहा हो। मैंने घने जंगल का वर्णन तो पढ़ा था, कुछ मामूली जंगल देखे भी थे परन्तु निविड़ कान्तार का ऐसा विस्तार जीवन में पहली बार देखा था। इतने में ही हिमालय की श्रेणियाँ दृष्टि पथ में आने लगीं। नेपाल-यात्राा का मेरा सबसे प्रबल आकर्षण था हिमालय, नगाधिराज हिमालय जिसके साथ भारत की असंख्य पुराकथाएँ और उदात्त कल्पनाएँ लिपटी हुई हैं। कालिदास, प्रसाद, पन्त और दिनकर के अनेक काव्य-बिम्ब मेरी चेतना में अनायास ही उद्बुद्ध होने लगे। कालिदास ने पृथ्वी के मानदण्ड के रूप में उसकी विराट् कल्पना की है। भगवान शंकर के संबंध में हिमालय के अनेक प्रसंग कालिदास की आनंद-कल्पना के सहज अंग बन गए थे और कवि की भक्ति शत-शत बिम्बों के फूल निरंतर उसके प्रति अर्पित करती रही। प्रसाद ने हिमालय के उस आदि रूप का चित्रण किया है जो प्रलय के उपरांत सर्वप्रथम आविर्भूत हुआ था। उत्तंग शिखरों से मंडित हिमालय का वह दिगन्तव्यापी कलेवर ऐसा लगता था मानो अभी उसकी प्रलय-समाधि भंग नहीं हुई थी- और प्रलय के समुद्र से उन्मग्न पृथ्वी पूरी शक्ति के साथ उसे पकड़े हुए थी जिससे कि कहीं फिर न डूब जाए। पन्त के प्रकृति काव्य में जिसके अनेक भव्य चित्र अंकित है, वही हिमालय मेरे सामने साक्षात् खड़ा था। शुभ्र-शांति में समाधिस्थ,

शाश्वत सौंदर्य के प्रतीक उस पुंजीभूत आकार को देखकर कवि पंत की कल्पना के समान मेरी कल्पना भी महाश्चर्य में डूब गई और 'कुमार संभव' के उदात्त–कोमल प्रसंग चलाचित्र के समान मेरे मन में घूमने लगे। यहीं किसी निभृत गुफा मे उमा ने शिव का वरण करने के लिए कठोर तपस्या की होगी– यहीं निकटवर्ती कैलाश के शिखर पर त्रिनेत्र की अग्नि शिखाओं से कामदेव भस्म हुआ होगा। इतने ही में मुझे अपने देश के वर्तमान सीमा संकट का स्मरण हो आया और दिनकर की ओजस्वी वाणी मेरे कानों में गूँजने लगी–

'जिसके द्वारों पर खड़ा क्रान्त
सीमापति ! तूने की पुकार–
पद दलित इसे करना पीछे
पहले ले मेरा सिर उतार।'

तभी न जाने कैसे मुझे अपने नाम–परिवर्तन का प्रसंग याद आ गया। नागों के उपासक नगाइच वंश में जन्म होने के कारण पितामह ने मेरा नाम नागेन्द्र रखा था। यह नाम दसवीं कक्षा तक यथावत् चलता रहा, पर दसवीं कक्षा में एक अध्यापक अपने–आप ही नगेंद्र कह कर मेरा नाम पुकारने लगे क्योंकि अंग्रेजी में नागेंद्र और नगेंद्र की वर्तनी एक ही है। प्राय: उसी समय साहित्य के प्रति मेरी रुचि जगने लगी थी और शब्द–अर्थ के सौंदर्य के संस्कार धीरे–धीरे व्यक्त होने लगे थे। मैंने अनुभव किया कि नागेंद्र की अपेक्षा नगेंद्र नाम शब्द और अर्थ दोनों की दृष्टि से अधिक सुन्दर है और मैंने उसी का प्रयोग करना आरंभ कर दिया। आत्मचिन्तन के एकांत क्षणों में मेरी बाल–कल्पना हिमालय के जिस विराट बिम्ब को अपनी चेतना में प्राय: बाँधने का प्रयत्न करती थी, वहीं आज अपने अपार ऐश्वर्य के साथ मेरे सामने विद्यमान था और उस विराट–भाव को आत्म सात करता हुआ मैं एक अपूर्व आह्लाद का अनुभव कर रहा था। थोड़ी देर में बादल छँट जाने से धूप एक–साथ खिल उठी। मैंने खिड़की से झाँक कर देखा तो नीचे पर्वत के विशाल स्कन्ध पर तैरती हुई हमारे विमान की छाया ऐसी लग रही थी जैसे किसी देव–मंदिर के रजत–शिखर पर छोटा–सा पतंगा मँडरा रहा हो। और, मैं सोचने लगा कि कल्पना से वंचित होकर यथार्थ कितना क्षुद्र बन जाता है।

अब तक हम नेपाल राज्य में प्रवेश कर चुके थे; सामने की पर्वत श्रेणी पार करते ही विमान काठमांडू घाटी में उतरने लगा। परिचारिका ने हिन्दी में रटा हुआ वाक्य दोहराया और मैं कुर्सी–पेटी बाँध कर हवाई अड्डे पर उतरने के लिए तैयार हो गया। काठमांडू का हवाई अड्डा मध्यम श्रेणी का है। जिस दिन मैं लौट रहा था– उसी दिन उसके इतिहास में पहली बार एक बड़ा जैट विमान उतरा था–यानी फॉकर और डकोटा आदि के ही उतरने की व्यवस्था सामान्यत: वहाँ थी। परन्तु जिसकी सीमा पर हिमालय की श्रेणियाँ अर्धवृत्त बनाकर खड़ी हों, उसके परिदृश्य में विराट तत्व का समावेश तो अपने–आप ही हो जाता है। हिमालय के शिखरों की पृष्ठभूमि में उड़ते हुए विमान अपने सामान्य आकार से भी छोटे दिखाई पड़ते थे। उन्हें देखकर मुझे पुराणों में वर्णित देव–गंधर्व आदि के विमानों का स्मरण हो आया वे भी यहाँ इसी तरह उड़ते रहते होंगे। यान से नीचे आते ही कुछ दूर चल कर मेरे आतिथेय मिल गए और सामान लेकर मैं उनके साथ चल दिया। विश्वविद्यालय की ओर से मेरे ठहरने की व्यवस्था एक होटल में की गई थी किन्तु मेरे मित्र ने वह प्रस्ताव रद्द कर अपने घर ही ले चलने का आग्रह किया। नेपाल को पर्यटकों का स्वर्ग कहा जाता है– प्रकृति और कला का ऐसा अपूर्व वैभव अन्यत्र दुर्लभ है। मैंने अपने मित्र से कहा कि मैं दो दिन के लिए ही आया हूँ तो वे बोले कि दो दिन में तो आप नेपाल के दर्शनीय स्थानों की तालिका भी नहीं बना सकेंगे। मैंने उत्तर दिया कि कुछ चर्म–चक्षुओं से देख लेंगे और शेष को कल्पना की आँखों से!

मित्र के घर पहुँचकर चाय पीते–पीते शाम हो गई, इसलिए उस दिन सिर्फ शहर में ही घूमने का कार्यक्रम बनाया। काठमांडू एक रंगीन पहाड़ी शहर है जिसमें नए और पुराने का अनमेल मिश्रण है। शहर का नया भाग,जहाँ दूतावास आदि है,आधुनिक ढंग का बना हुआ है– पाश्चात्य उपयोगी वास्तुकला की इमारतें हैं और पक्की साफ सड़क

हैं।पुराने हिस्से में स्थानीय नागरिकों के मकान हैं जिनमें लकड़ी और मिट्टी का प्रयोग अधिक और पत्थर का कम है। संपन्न व्यक्तियों के विशेष कर राणा–परिवार के सदस्यों के भवन सामन्तीय ढंग के हैं,उनके चारों और प्राचीर हैं ओर भीतर पहाड़ी शैली के गढ़ीनुमा मकान हैं जिसमें एक प्रकार के अनगढ़ पौरुष का आभास मिलता है। राजमहल में नयी और पुरानी वास्तु–शैली का मिश्रण है, बाहर की प्राचीर जहाँ पुरानी ढंग की है, वहाँ भीतर के भवन नये ढंग के नये साज सामान से लैस हैं। सरकारी इमारतें नये ढंग की हैं,पर प्रधान मंत्री तथा मंत्रिमंडल के अन्य सदस्य वहाँ न रहकर अपने खानदानी मकानों में ही रहते हैं। शहर का पुराना भाग बहुत साफ नहीं, वातावरण वहाँ का उत्तर प्रदेश के उत्तर–पूर्वी शहरों का–सा है। हाँ, बाजार में काफी वैचित्र्य और रंगीनी हैं, दूर–पूर्व एशिया, चीन , भारत और अब अमरीका का माल विदेशी कीमत पर वहाँ मिलता है, नेपाल की रंग– बिरंगी चीजें बाजार के आकर्षण को और भी बढ़ा देती हैं। खाने–पीने की चीजें काफी महँगी हैं। नगर के विशेष स्थानों पर चौक और चौराहों पर– महाराजाधिराज महेंद्र व महारानी के चित्र लगे हुए हैं,जिनके नीचे संस्कृत निष्ठ नेपाली भाषा में,देवनागर अक्षरों में, हिन्दू राजभक्ति परम्परा के अनुकूल, राजदम्पत्ति की मंगल–प्रशस्तियाँ अंकित हैं, नगर भर में, मार्गों पर, हाटों में, प्रशासनिक भवनों पर सर्वत्र नेपाली भाषा का ही प्रयोग है–कहीं पर 'अन्तरराष्ट्रीय भाषा' का आश्रय नहीं लिया गया।

दूसरा दिन हमने काठमांडू के विशेष दर्शनीय स्थानों के निरीक्षण के लिए रखा था। अत: सबेरे दस बजे के लगभग हम लोग घर से चल दिए। समयाभाव के कारण केवल दो–तीन प्रमुख स्थानों का ही कार्यक्रम बन सका– नगर में स्थित काष्ठ मण्डप, स्वयंभूनाथ और पाटन का कृष्ण मंदिर। काष्ठ मण्डप शहर के मध्यभाग में अवस्थित है। इसका रूपाकार पगोडा के समान है संपूर्ण मण्डप एक ही महावृक्ष के काष्ठ से निर्मित है। आरंभ में यह यात्रियों का विश्राम गृह था, पर धीरे धीरे इसमें देवभावना का समावेश होता गया और यह एक प्रकार का देवस्थान बन गया। काठमांडू काष्ठ मण्डप का ही तद्भव रूप है। कला की दृष्टि से कोई विशेष शिल्प सौदर्य इसमें नहीं है, पर सब मिल कर यह एक विचित्र वस्तु है। वहाँ से हम पाटन का कृष्णमंदिर देखने गये जो बागमती नदी के पार नगर से कुछ मील दूर पर है। पाटन एक छोटा सा उपनगर है जिसमें हर जगह छोटे–छोटे मंदिर या मूर्ति गृह बने हुए हैं। यह कृष्ण मंदिर प्राय: दो हजार वर्ष पुराना है और इसकी विशेषता यह है कि कहीं भी इसमें चूने का प्रयोग नहीं किया गया। वास्तुकला का यह अद्भुत चमत्कार है, चूने के बिना भी यह इतना मजबूत बना हुआ है कि भूकम्पों का इस पर अब तक कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मूर्तिकला और वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है– स्वयंभूनाथ का मंदिर, जो एक पर्वतखंड के ऊपर विराट् भूमिका पर स्थित है। इस मंदिर का प्रमुख आकर्षण है– स्वर्ण पत्र से मंडित भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमा। परन्तु स्तूप का स्वरूप भी अपने–आप में कम आकर्षक नहीं है, जिसमें चारों ओर दो–दो आँखें लगी हुई है। इस स्तूप को देखकर ऐसा लगता है मानो वह एक चिर सजग प्रहरी की भाँति चतुर्दिक् दृक्पात करता हुआ नगर की रक्षा कर रहा हो।

नेपाल शैव, शाक्त और बौद्ध धर्मों का केंद्र रहा है। इस समय वह विश्व में एक मात्र हिन्दू राज्य है जो न तो भारत की तरह धर्म निरपेक्ष है और न पाकिस्तान की तरह धर्म प्रतिबद्ध। वह इस बात का प्रमाण है कि हिन्दू धर्म को उसके सहज उदार रूप में स्वीकार कर लेने के बाद धर्म निरपेक्षता उतनी अनिवार्य नहीं रहतीं। इसीलिए शताब्दियों से वह एक ओर भगवान् पशुपतिनाथ और दूसरी ओर तथागत बुद्ध के वरदानों का युगपत् उपभोग करता रहा है। अनेक हिन्दू प्रथाएँ ,जो भारत में विलुप्त हो गई है, आज भी वहाँ की व्यावहारिक संस्कृति का अंग है। नेपाल और भारत के सम्बन्ध अत्यन्त आत्मीय तथा सौहार्द्रपूर्ण हैं– संस्कृति और धर्म की समानता चिरकाल से दोनों राष्ट्रों को स्नेह बंधन में बाँधे हुए है।

रात्रि में भगवान् पशुपतिनाथ के दर्शन का कार्यक्रम बना। उस दिन शिवरात्रि थी और मार्च की 9 तारीख,यानी मेरा जन्मदिवस भी संयोग से उसी दिन था। भक्तों का अपार समुदाय सभी दिशाओं से उमड़ रहा था–मंदिर के चारों ओर दूर–दूर तक यात्रियों के तम्बू और दुकानें लगी हुई थी। मेरे आतिथेय मित्र ने ,जो वहाँ इंजीनियर थे, मंदिर के निकट तक गाड़ी ले जानेका प्रबंध कर लिया था,जिससे हमें अधिक पैदल न चलना पड़े। मंदिर के प्रांगण में नंगे पाँव प्रवेश करना

था और कीचड़ होने के कारण मोजे पहनने की सुविधा नहीं थी। सामान्यत: मेरे लिए जाड़े की रात में यह सब कष्ट साध्य था, परन्तु और कोई गति भी नहीं थी। एक श्रद्धालु मित्र ने कहा- भगवान् पशुपतिनाथ के मंदिर में क्या डरना ? भीड़ में धक्का-मुक्की करते हुए अंत में हम देव-विग्रह के सामने पहुँच गए और प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार भगवान को प्रणाम कर क्षण भर में आगे बढ़ गया, क्योंकि इससे अधिक तो उस जन-प्रवाह में रुकने की सम्भावना ही नहीं थी।

10 मार्च को निर्वाचन-समिति की बैठक थी और उसी दिन पूर्वाह्न में मुझे नेपाल में भारतीय राजदूत श्री श्रीमन्नारायण से मिलना भी था। वैसे भी अपने देश के राजदूत से मिलना वैदेशिक शिष्टाचार का एक अंग है और फिर बंधुवर श्रीमन जी से तो मेरे काफी पुराने स्नेह सम्बन्ध थे। मध्याह्न का भोजन उनके यहाँ करने के बाद मैं तुरंत ही विश्वविद्यालय की नयी इमारत की ओर चल दिया। यह इमारत काठमांडू से कई मील दूर कीर्तिपुर नामक उपनगर में बन रही है। तब तक केवल इसका प्रशासनिक खंड व दीक्षांत भवन बन चुके थे और विज्ञान-विभाग की इमारतें बन रही थीं। विश्वविद्यालय के प्रवेशद्वार पर नागर अक्षरों में त्रिभुवन विश्वविद्यालय लिखा हुआ है और दीर्घा के भीतर सामने की दीवार पर नेपाली भाषा में उसकी स्थापना का संक्षिप्त इतिवृत दिया हुआ है विश्वविद्यालय परिदृश्य अत्यन्त भव्य हैं वह विशाल भूमिखंड, जिस पर विश्वविद्यालय स्थित है, पर्वत माला से घिरा हुआ अर्धचन्द्राकार है। निर्माण कार्य पूरा होने पर त्रिभुवन विश्वविद्यालय का परिवेश प्राकृतिक और मानवीय कला के संयोग से एक अपूर्व गरिमा से मण्डित हो जाएगा। विश्वविद्यालय की स्थापना सन 1960 में हुई थी; इसके अन्तर्गत कला, सामाजिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान के प्राय: सभी प्रमुख विभाग और देश के विभिन्न भागों में स्थापित 35-36 स्नातक- विद्यालय है। विभिन्न विषयों के लिए नेपाल के सुयोग्य नागरिकों के अतिरिक्त,भारत और अमरीका आदि के विशेषज्ञ विद्वानों की नियुक्ति की जाती है। भारत सहयोग-संस्थान की ओर से 20-25 भारतीय प्राध्यापक वहाँ भिन्न-भिन्न विभागों में कार्य कर रहे हैं। हिन्दी विभाग में एक आचार्य प्रोफेसर , एक उपाचार्य (रीडर) तथा कई प्राध्यापक है। नेपाली के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण हिन्दी और संस्कृत में वहाँ के छात्रों की विशेष रुचि है। कुलपति महोदय के अनुरोध पर मैंने पाठ्यक्रम और शोध-व्यवस्था आदि के विषय में हिन्दी-विभाग के सहयोगी-बंधुओं से विचार-विनिमय किया और तुलनात्मक अनुसंधान पर विशेष बल देने का परामर्श किया। नेपाल के प्राचीन ग्रंथागारों में अपार सामग्री भरी पड़ी है। वह प्राय: संस्कृत और पालि भाषा में है- पर मैथिली हिन्दी के ग्रंथों का भी संग्रह काफी है। उनका सम्पादन और प्रकाशन निश्चय ही उपयोगी होगा। निर्वाचन-समिति की कार्यवाही में लगभग दो घंटे लगे।

अगले दिन 11 मार्च 1967 को मध्याह्न में मुझे नेपाल-विमान-सेवा के हवाई जहाज से दिल्ली लौटना था। अत: 10.30 बजे के आसपास हमलोग हवाई अड्डे के लिए चल दिये। उस दिन यूरोप से कोई विशेष अतिथि काठमांडू आ रहे थे, अत: हवाई-अड्डे के मार्ग जल्दी ही बंद हो गये थे। परन्तु मित्र के प्रभाव से हमें किसी न किसी प्रकार रास्ता मिल गया और हम समय पर मुख्य मार्ग से कुछ बचकर हवाई अड्डे पर आ गये। वहाँ मालूम हुआ कि हमारे विमान में दो-तीन घंटे का विलम्ब है। इतना समय काटने में थोड़ी असुविधा हुई खासकर मेरे मित्रों को, जो मेरे बार-बार आग्रह करने पर भी वहाँ से नहीं गये। आखिर हवाई जहाज पहुँच ही गया और नियत समय पर मैंने अपने आतिथेय बंधुओं से विदा ली, जिनके कारण उस अपरिचित प्रदेश में मुझे सब प्रकार की सुख-सुविधा रही थी। वह विमान भी फॉकर फ्रेंडशिप था- अन्तर केवल इतना ही था कि भीतर की साजसज्जा व खान-पान में थोड़ा-सा नेपाली स्पर्श था और सूचनाएँ मुख्यत: नेपाली भाषा में दी जाती थी, बाद में विदेशी यात्रियों और भारतीयों के लिए अंग्रेजी में उनकी आवृत्ति कर दी जाती थी। आते समय अन्तरिक्ष में कुहरा छाया हुआ था,इसलिए पवर्तमालाएँ साफ दिखाई नहीं देती थी। पर उस दृश्य का भी अपना आकर्षण था- कुहरे के झीने आवरण में हिम-धवल शिखरों की शोभा कुछ और ही थी। तीन घंटे में विमान दिल्ली के ऊपर आ गया और दस मिनट के भीतर पालम पर उतर गया। वहाँ मुझे लेने के लिए बच्चे व परिवार के व्यक्ति पहले से खड़े हुए थे। जाते समय बच्चों को मैं समझा गया था कि नेपाल से कोई चीज लाना सम्भव नहीं है, अत: नई दिल्ली में जनपथ के बाजार से उनकी फरमाइश पूरी करनी पड़ी।

अभ्यास

1. हिमालय के विषय में लेखक के विचार लिखिए।
2. नेपाल में लेखक के ठहरने की क्या व्यवस्था थी? संक्षेप में लिखिए।
3. काठमांडू भ्रमण के बाद लेखक के अनुभव अपने शब्दों में लिखिए।
4. भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन के समय लेखक ने क्या-क्या देखा? लिखिए।
5. नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. आपने किसी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल की यात्रा की हो तो उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. किसी दर्शनीय स्थल के भ्रमण हेतु एक योजना तैयार कीजिए।
3. अपने आसपास के दर्शनीय स्थानों की सूची बनाइए। दर्शनीय स्थलों के चित्रों का संकलन कीजिए।

***